बी. ए. प्रथम बर्ष

अनिवार्य राष्ट्रभाषा हिंदी (M. I. L.)

एवं अनिवार्य राष्ट्रभाषा हिंदी (N O N-H I N D I)

डॉ. बिभा कुमारी

विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर

संक्षेपण-

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, संक्षेपण में किसी पाठ, अनुच्छेद, परिच्छेद, विस्तृत टिप्पणी इत्यादि को संक्षिप्त कर दिया जाता है कहने का तात्पर्य है कि किसी बड़े पाठ में प्रस्तुत मुख्य विचारों, तर्कों इत्यादि को लघुतर आकार में प्रस्तुत करना ही संक्षेपण कहलाता है। इसकी संरचना भी निबंध जैसी ही होती है। कार्यालय, पत्रकारिता, शिक्षा इत्यादि क्षेत्रों में संक्षेपण की अधिक आवश्यकता होती है।

अंग्रेजी में संक्षेपण को 'समराइजिंग' 'प्रेसी राइटिंग' अथवा 'प्रेसी' भी कहते हैं।

आज की अत्यधिक व्यस्त दिनचर्या में यह आवश्यक हो गया है कि कम शब्दों में अधिक बात लोगों तक पहुंचाई जा सके। किसी भी पाठ के मुख्य भाव की रक्षा करते हुए उस पाठ को एक तिहाई शब्दों में लिखना ही संक्षेपण है। उदाहरण के लिए सौ शब्दों के अनुच्छेद का संक्षेपण तैंतीस-चौन्तीस शब्दों में होगा।

संक्षेपण में अनावश्यक बातों का पूर्ण त्याग करते हुए सिर्फ आवश्यक बातों को ही लिखा जाना चाहिए। संक्षेपण की प्रक्रिया के लिए कबीर का यह दोहा अत्यंत उपयुक्त प्रतीत होता है-

"साधु ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय।

सार-सार को गहि रहै, थोथा देत उड़ाय।।"

संक्षेपण के दौरान सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मूल पाठ का भाव पूर्णतः सुरक्षित रहना चाहिए। संक्षेपण-प्रक्रिया हेतु विद्वानों ने निम्नलिखित सुझाव दिए हैं।

1. सर्वप्रथम पाठ को बार-बार पढ़कर मूल विषय का भावार्थ भली-भाँति समझ लेना चाहिए, तत्पश्चात ही संक्षेपण लिखना शुरू करना चाहिए।
2. संक्षेपण करने से पूर्व पाठ के महत्वपूर्ण तथ्यों को रेखांकित कर लेना चाहिए।
3. मूल पाठ में व्यक्त विचारों, भावों व तथ्यों को क्रमबद्ध कर लेना चाहिए।
4. मूल अनुच्छेद के एक तिहाई में ही संक्षेपण करना चाहिए। अपनी ओर से कोई भी बात नहीं जोड़नी चाहिए
5. संक्षेपण को अंतिम रूप देने से पहले एक कच्चा रूप तैयार कर लेना चाहिए, भलीभाँति देख लिया जाना चाहिए कि सभी महत्वपूर्ण भावों का अंतर्भाव उसमें हो चुका है या नहीं।

6. कहावतें, मुहावरे, अलंकार, सूक्ति इत्यादि को हटा देना चाहिए।
7. संक्षेपण तैयार करने के बाद उसके लिए सुयोग्य शीर्षक का चयन किया जाना चाहिए।
8. संक्षेपण स्वतःपूर्ण होना चाहिए। इसमें भाव एवं भाषा शुद्ध एवं सुस्पष्ट होनी चाहिए।
9. संक्षेपण की भाषा में प्रवाह एवं क्रमबद्धता होनी चाहिए।

   उपर्युक्त बातों का ध्यान रखकर संक्षेपण करने पर किसी भी पाठ का संक्षेपण सफलतापूर्वक किया जा सकता है।